कक्षा की परिधि पर खड़ा प्लूटो

(समावेशी कक्षा की ओर एक शैक्षणिक चिंतन)

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: अरविन्द कुमार सिंह, प्राथमिक विद्यालय सहायक अध्यापक, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

हाल ही में मुझे एक विद्यालय में आयोजित अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM) में सम्मिलित होने का अवसर मिला। विद्यालय की कक्षा की दीवारें आकर्षक आकृतियों, शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) और BaLA अवधारणा आधारित चित्रों से सुसज्जित थीं। इन्हीं सज्जाओं के मध्य एक दीवार पर सौरमंडल का सुंदर चित्र अंकित था—सूर्य के चारों ओर अपनी-अपनी कक्षाओं में परिभ्रमण करते आठ ग्रह।

उस चित्र ने अनायास ही मुझे मेरे छात्र जीवन की स्मृतियों में पहुँचा दिया। एक समय था जब हम सूर्य के साथ नौ ग्रह पढ़ते थे और प्लूटो भी उनमें सम्मिलित था। वर्ष 2006 में International Astronomical Union द्वारा ग्रह की परिभाषा में परिवर्तन किया गया और प्लूटो को 'बौना ग्रह' घोषित कर दिया गया। वैज्ञानिक दृष्टि से यह निर्णय तर्कसंगत रहा होगा, किंतु उस क्षण मेरे मन में एक गहरा शैक्षणिक प्रश्न उभरा—क्या श्रेणी बदल जाने से किसी अस्तित्व का महत्व कम हो जाता है?

प्लूटो आज भी अपनी कक्षा में उसी निष्ठा और अनुशासन से सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। उसकी गति में कोई कमी नहीं आई; परिवर्तन केवल हमारे मानदंडों में आया है। वास्तव में 'प्लूटो' हमारी कक्षा के उन विद्यार्थियों का सशक्त प्रतीक है, जो निरंतर प्रयासरत रहते हुए भी अक्सर केंद्र से दूर दिखाई देते हैं।

कक्षा के प्लूटो

कक्षा में कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो अपनी मेधा और अभिव्यक्ति से तुरंत पहचान बना लेते हैं। कुछ विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है। किंतु इनके बीच एक बड़ा समूह उन विद्यार्थियों का होता है जो न तो अत्यंत प्रखर हैं और न ही अत्यंत कमजोर—वे नियमित हैं, प्रयासरत हैं, अनुशासित हैं, किंतु विशेष पहचान से वंचित रह जाते हैं।

मेरे विचार में यही विद्यार्थी हमारी कक्षा के 'प्लूटो' हैं—शांत, निरंतर और प्रतिबद्ध।

इस संदर्भ में महान शिक्षाविद् **John Dewey** का कथन स्मरणीय है—

"Education is not preparation for life; education is life itself."

यदि शिक्षा स्वयं जीवन है, तो उसमें प्रत्येक अनुभव और प्रत्येक व्यक्ति का महत्व है—चाहे वह केंद्र में हो या परिधि पर।

समावेशन की नीति और कक्षा की वास्तविकता

National Education Policy 2020 शिक्षा को समावेशी, न्यायसंगत और बाल-केंद्रित बनाने का स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह स्वीकार करती है कि प्रत्येक बच्चा अपनी अलग गति से सीखता है और शिक्षा व्यवस्था का दायित्व है कि वह इस विविधता को सम्मान दे।
इसी क्रम में FLN (Foundational Literacy and Numeracy) यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि प्रत्येक बच्चा प्रारंभिक स्तर पर पढ़ने, लिखने और गणना की बुनियादी दक्षताओं को आत्मविश्वास के साथ अर्जित करे। यहाँ बल केवल परिणाम पर नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया और निरंतर प्रगति पर है।
मेरे लेख का मूल विचार भी यही है—यदि हम केवल उच्च उपलब्धि या न्यूनतम स्तर की चिंता करेंगे, तो कक्षा के 'प्लूटो' अदृश्य हो जाएँगे। वास्तविक समावेशन का अर्थ है प्रत्येक विद्यार्थी की प्रगति को देखना, चाहे वह धीमी हो, पर स्थायी हो।

शिक्षक की भूमिका

एक संवेदनशील शिक्षक का दायित्व केवल प्रतिभा को पहचानना या कमजोरी को सुधारना नहीं, बल्कि बीच के उन मौन प्रयासों को भी देखना है जो निरंतरता से सीखने की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहे है । कक्षा के इन 'प्लूटो' को सशक्त बनाने हेतु हम कक्षा में निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं

01 **प्रयास का उत्सव मनाएँ (Celebrate Effort)**
केवल सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वालों को ही नहीं, बल्कि निरंतर सुधार दिखाने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मान दें।

02 **सकारात्मक सुदृढ़ीकरण**
छोटे-छोटे प्रयासों और आंशिक प्रगति की कक्षा में सार्वजनिक रूप से सराहना करें।

03 **विविध भूमिकाएँ सौंपें**
कक्षा की जिम्मेदारियाँ केवल प्रखर विद्यार्थियों को न देकर, अनुशासित और निरंतर प्रयास करने वाले विद्यार्थियों को भी दें।

04 **व्यक्तिगत संवाद**
समय-समय पर व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से उनकी रुचियों और चुनौतियों को समझें।

05 **सहकर्मी शिक्षण (Peer Teaching)**
उन्हें अन्य विद्यार्थियों की सहायता करने का अवसर दें, जिससे उनका आत्मविश्वास और अवधारणात्मक स्पष्टता बढ़े।ये छोटे-छोटे कदम कक्षा को अधिक समावेशी बना सकते हैं।

06 **अवसर की उपलब्धता**
उन्हें समय समय पर विभिन्न शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक गतिविधियों में लगातार पर्याप्त अवसर प्रदान करें।

शिक्षा का अनंत आकाश

‘प्लूटो’ का रूपक हमें यह सिखाता है कि परिभाषाएँ बदल सकती हैं, किंतु प्रयास और अस्तित्व का महत्व कम नहीं होता। उसी प्रकार कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी अपने भीतर संभावनाओं का एक ब्रह्मांड समेटे हुए है।जब हम समावेशी नीति-दृष्टि को अपने व्यवहार में उतारते हैं और सीखने की प्रक्रिया को सम्मान देते हैं, तभी हमारा शैक्षणिक सौरमंडल संतुलित और प्रकाशमान बनता है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल उत्कृष्टता को पुरस्कृत करना या न्यूनतम उपलब्धि सुनिश्चित करना नहीं है, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी की संभावनाओं को पहचानना और विकसित करना है। यदि हम केवल परिणाम (Results) को ही सफलता का मानदंड बना लें, तो अनेक परिश्रमी विद्यार्थियों की आंतरिक प्रगति हमारी दृष्टि से ओझल हो जाएगी। शिक्षा का उद्देश्य केवल चमकते ग्रहों की गणना करना नहीं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि कोई ‘प्लूटो’ हमारे शैक्षणिक सौरमंडल से ओझल न हो क्योंकि शिक्षा का आकाश अनंत है—और उसमें चमकने का अधिकार प्रत्येक विद्यार्थी को है।

LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION

लेखक परिचय:

अरविन्द कुमार सिंह के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी ,जनपद बुलंदशहर उत्तर प्रदेश में पिछले 9 वर्षों से सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत है। इनके विद्यालय के छात्र-छात्राएं पिछले 3 वर्षों से उड़ान नाम की दीवार पत्रिका बना रहे हैं साथ ही छात्र-छात्राओं के लिखे लेख ,कविता, कहानी और चित्र बाल विज्ञान पत्रिका चकमक में लगातार प्रकाशित होते रहते हैं। इनके विद्यालय के छात्रों द्वारा बनाया गया टाइमलाइन कैलेंडर को SCERT राजस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हवा महल पत्रिका में छप चुका है। इन्हें नवाचारी गतिविधियाँ समूह भारत द्वारा आयोजित ‘राष्ट्रीय नवाचारी शिक्षा रत्न सम्मान 2023-24 में शिक्षा रत्न सम्मान से सम्मनित किया जा चुका है। इनके कक्षा अनुभव लगातार विभिन्न पत्रिका एवं वेबपोर्टल पर प्रकाशित होते रहते है।